अन्तरा-शब्दशक्ति

तुम्हीं की गुजारिश

काव्य संग्रह

आशीष डाकलिया

लम्हों की गुजारिश

(काव्य संग्रह)

आशीष डाकलिया

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-5372-027-8"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- आशीष डाकलिया
मूल्य - ६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
LAMHON KI GUJARISH BY ASHISH DAKALIYA
वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

	भूमिका	5
1.	बेबसी	7
2.	वीरता	8
3.	तुम्हारा होना चाहता हूँ	9
4.	शायर हो गया हूँ	10
5.	लम्हे	11
6.	मेरे शिक्षक	12
7.	माँ	13
8.	नासमझी	14
9.	मेरा साथ दोगी न	15
10.	स्वार्थ	16
11.	ख्वाहिशें	17
12.	आशा	18
13.	बचपन	19
14.	नींव का पत्थर	20
15.	किस्मत	21
16.	अशेष हो जाऊँ	22
17.	बहु या बेटी	23

18.	आशीष	24
19.	बढ़ते कदमो	25
20.	रोटी कपड़ा और मकान	26
21.	पिता	27
22.	महफ़िल	29
23.	समय	31

भूमिका

मेरे लिखने के पीछे कभी कोई उद्देश्य या ध्येय नहीं था,

बस जब कभी किसी भाव की अभिव्यक्ति करनी होती,

तो मैं लिख लेता,

जब कोई बात किसी को कहनी होती,

तो मैं लिख लेता,

जब दिल की बात कहनी होती,

तो मैं लिख लेता,

जब कभी मेरी खुद से बात नहीं होती,

तो मैं लिख लेता,

जब कभी मेरी खुद से मुलाकात नही होती,

तो मैं लिख लेता।

में हर मौसम में लिखता हूँ,

ख़ुशी और गम में लिखता हूँ,

मेरे लेखनी के पीछे मेरे पिता और दादा का आशीर्वाद हैं, उनमें लिखने की एक अलग ही कला थी।

मुझे ये आशीर्वाद उनसे मिला मगर ये मंच मुझे अंतरा शब्दशक्ति और प्रीति मासी ने दिया, मैं हमेशा जब भी कुछ लिखता इन्हें जरूर दिखाता, आखिर इस मामले में गुरु शिष्य सा सम्बन्ध हो गया हमारा, मैं

उनसे पूछता वो मुझे बताते, बस इसी कड़ी में आज ये मौका मिला कि मैं कुछ और अच्छा लिख सकूँ या कर सकूँ और आज यह किताब लम्हों की गुज़ारिश उसी प्रयास का छोटा सा परिणाम आप सभी पाठकों को समर्पित है।

आशीष डाकलिया

बेबसी

आँखें भर आयी थी,
चुलबुल सी गुड़िया उसकी
देख उसे मुस्काई थी,
नादान थी वो उसकी मजबूरी से,
पर आँखों में उसके सच्चाई थी,
सपने थे उसके भी हँसने गाने के,
अपनी माँ की बेबसी से वो परायी थी।

निश्छल सी वो, अपनी दुनिया में मस्त थी,
बार-बार माँ के पास आती,
वो उसे देखने में व्यस्त थी,
हर आते जाते हुए लोगो को देखती वो,
कुछ देते कुछ न देते, आँखे उसकी उसे तकती,
उम्मीद लगाए लोगो से देखती वो उनको जाती थी,
बेटी निश्छल सी उसकी, अपनी दुनिया में मस्त थी।

लिखी कविता देख इस चल चरित्र को,
लिखने को शब्द नहीं अब, की आँखें आज भर आयी है,
कितनी महँगी हो गयी ख़ुशी और पैसे ने अपनी कीमत बढ़ाई है।

वीरता

शस्त्र छोड़ शास्त्र को थामा,
धन्य हो गयी कोख उस माँ की,
जिसने उस वीर को जना,
तप कठोर करके,
जीवन को अपने तार दिया,
प्राणियों को अहिंसा महत्त्व बतलाके,
जियो और जीने दो का मुलभुत आधार दिया,
कर कठोर संकल्प मन में अपने,
सब परिजनों से आज्ञा लेकर,
अहिंसा के मार्ग पे चलके,
संयम पथ को अपनाया,
जैनो के चौबिस्वे तीर्थंकर बने,
नाम महावीर कहलाया।

तुम्हारा होना चाहता हूँ

तुम्हे जरुरत नहीं, अपनी आदत बनाना चाहता हूँ,
तुम्हारा होने से पहले, तुम्हे अपनाना चाहता हूँ,
क्या चाहूँ तुमसे, दिया है तुमने चाहत से जादा,
पा सको तुम मुझे में, खुद को तुममे खोना चाहता हूँ।

आ गयी हो जीवन में कहीं दूर से तुम,
बनी ही मेरे लिए हो ये एहसास दिलाना चाहता हूँ,
सुना है चाहत कमजोरी हो जाती है,
में तुमको अपनी ताकत बनाना चाहता हूँ।

देख सको तुम मुझमें खुद की खूबसूरती,
खुद को उस काबिल बनाना चाहता हूँ,
झगड़ो से बढ़ता है प्यार,
में ये करके दिखाना चाहता हूँ।

शायर हो गया हूँ

कुछ बात है तुझमें,
जिन्हें में देख के खुश हो जाता हूँ,
चेहरे से छुपाकर भाव, मगर मंद-मंद मुस्काता हूँ,
सुनना जरा बातों को मेरी,
कि कितना में तुमको जान पाया हूँ।
तेरी आँखों को निचे करके शर्माना,
तेरा ऊँगली को होठो से दबाना।
तेरा बात-बात पे मुस्काना, तेरा नजरे मिलके आँखे चुराना।
तेरा सादगी से इठलाना, तेरा खुद को देख के इतराना,
तेरा बालों को लहराना और चलते हुए रुक जाना।
कुछ-कुछ बोलके चुप होना, फिर सोच में खोना,
बातों को न बोलना और अदाओं से समझाना,
तुम्हारी वो धीमी-धीमी आवाज़,
कान में घूल सी जाती जब देती हो साज, तु
म्हारी अदा में भी एक अंदाज़ है,
क्या हो तुम मेरे लिए वो फिलहाल राज़ है।
तुम्हारी चेहरे की उस हँसी का में कायल हो गया हूँ,
तुम्हारी मदमस्त आँखों से में घायल हो गया हूँ।
सुनने में अजीब लगता हो,
मगर सच में तुमसे मिलके में शायर हो गया हूँ।

लम्हे

ये जो लम्हे होते है,
ये दुनिया में हर पल कहाँ होते है।
बहुत किस्मत से मिलते है लम्हे यहाँ,
जिनसे रूखे दिल भी जवां होते है।

सिखाती हैं दुनियाँ बहुत कुछ हमें,
मगर वो शब्दों में कहाँ बयां होते है।
लोग बहुत होते है सिखाने वाले,
मगर उनमें वो नूर कहा होता है।

मिली है तुम्हे दुनिया में जो जगह,
वो हर किसी को नसीब कहाँ होती है।
क्योंकि कोशिश करते नही हम कुछ पाने की,
कोशिश करने वालो के कदमो में कामयाबी का जहाँ होता है।

मेरे शिक्षक

न है अभिमान मुझे,
चाहिए बस सम्मान मुझे,
नही प्यास मुझे ऐशो आराम की,
चाहिए उनके चेहरे पे मुस्कान मुझे।

चाहत है सबके लिए सामान,
नहीं मुझमें भेदभाव का कोई ज्ञान,
अलग-अलग नामो से जाने मुझको,
कोई कहे शिक्षक, कोई कहे विद्वान।

तरक्की उनकी देख ख़ुशी मुझे होती है,
कोई दु:ख उन्हें हो तो आँखे मेरी रोती है।

उन्हें डांटना, फटकारना या आँखे दिखाना,
इन सबके पीछे उद्देश्य बस उनको समझाना।

जीवन में बहुत आगे जाना है,
बचपन को सफल बनाना है,
जिन्होंने तुम्हारे लिए अपना जीवन को संघर्ष में डाल दिया,
उनके संघर्ष को अपनी काबिलियत से चार चाँद लगाना है।

माँ

सृष्टि के रचनाकार ने जब सृष्टि को बनाया,
ध्यान में रखकर सबको, जब उसे सजाया,
फिर बारी आई बाटने की खुशियाँ सबको,
सबको समान खुशियाँ मिले इसीलिए उसने "माँ" को बनाया।

माँ क्या है !!! माँ नाम है जग में फैली सृष्टि का,
उस खुदा, रब, भगवान की दूर दृष्टि का,
माँ नाम है खुशियों की पहचान का,
माँ नाम है सिर्फ सम्मान का।

क्या हैं माँ, शब्दों में न बयान होगा,
माँ का अर्थ शास्त्रो में भी कहा होगा,
माँ खुद में एक संसार है, उसके होने से ही संस्कार है।

कहते है कुछ अच्छे कर्मो से भाग्य बन जाते है,
कुछ बुरे कर्म से हालात बदल जाते है,
लेकिन जब माँ साथ हो और सर पर उसका हाथ हो,
तो कायनात के बदल भी पल में टल जाते है।

और इससे जादा क्या कहूँ
कि कहने को तो माँ सिर्फ एक शब्द है,
मगर उस शब्द के जो नूर है,
वही इस संसार में असली कोहिनूर है।

नासमझी

नासमझी सी ये घडी है,
आफत में जान आ पड़ी है।
लाख कोशिश करे हम उनको यकीन दिलाने की,
मगर जंग उसूलो में छिड़ी है।

करते है कवायद उनको समझाने की,
थोड़ा सा ही सही, उनको हँसाने की।
आँख उनकी नम हो तो चैन यहाँ उड़ जाता है,
जाने कैसे वो रिश्ते बनाता है।

बात ये नहीं की वो नहीं जानते हमको,
बात ये बी नहीं की हम नहीं मानते हमको।
बात ये भी नहीं की बेवफा है,
बात ये भी नहीं की हम उनसे जुदा है,
बात तो उसूलो की आ पड़ी है, बस जंग उसूलो में छिड़ी है।

हम सोचते है की उनको सब बता दे,
अपना थोड़ा सा ही मगर हक़ जता दे।
वो सोचते है की सब दिखावा है, झूठा ही तेरा वादा है।
इसी कशमकश में जिंदगी चौराहे में खड़ी है,
जंग तो उसूलो में पड़ी है।"

मेरा साथ दोगी न

कभी जो चाहूँ साथ तो हाथ दोगी न,
कभी जो रूठ जाऊँ तो मना लोगी न।
मुझे नहीं पता कौन है मेरा अपना,

कभी जो चला जाऊँ तो बुला लोगी न।
कभी जो न कर पाऊँ बात, मेरी आवाज़ बनोगी न।
कभी जो राहु खुद से खफा, तो मेरे ख़यालात बनोगी न।
कभी जो हो मेरे आँखों से आँसुओ की बरसात,
तो मेरे चेहरे की मुस्कान बनोगी न।
कभी जो में न समझ पाऊँ, तो मेरे जज़्बात बनोगी न।
हो सकता है भूल जाऊँ सब कुछ्, इस दुनिया के झमेलो में,
तो मेरे लिए मेरी याददाश्त बनोगी न,
अगर कभी जो न रख पाऊँ तुम्हारा ख्याल।
या न कर पाऊँ तुमसे दिल की बात,
तो मुझसे शिकायत तो करोगी न।
कभी जो न देख पाऊँ की क्या है सही और क्या गलत,
तो मेरी आँख बनोगी न,
कभी जो लड़खड़ाकर गिर जाऊँ में कहीं।
तो मेरे को सहारा देने वाला हाथ बनोगी न।
कभी जो चल पडू किसी गलत राह पर,
तो मुझे रास्ता दिखाने मेरी हमसफ़र बनोगी न,
और कभी जो न रहा मैं, तो मुझे याद तो करोगी न।।"

स्वार्थ

आज का इंसान झूठ का पुलिंदा है,
इंसानियत से मर चूका, झूठ के सहारे जिन्दा है,
हर पल हर जगह बस स्वार्थ ही समाया है,
कोई नही यहाँ जो बिना काम मुस्काया है।

स्वार्थ का भी दो स्वरुप है,
खुद का हो तो खूबसूरती दिखे,
दूसरे के स्वार्थ में कुरूपता का रूप समाया है।

समझ से परे है रिश्ते यहाँ लोगों के,
स्वार्थ से है भाईचारा, स्वार्थ से ही लड़ाई है,
स्वार्थ से ही है पूछ यहाँ अपनों की,
स्वार्थ ने ही दिवार बनायीं है,

स्वार्थ के चलते होती बस रुस्वाई है,
स्वार्थ का नहीं कोई पर्यायी है,
थोडा स्वार्थी होना भी जरुरी है,
क्योंकि कभी से स्वार्थी होना आत्मसम्मान के लिए भी जरुरी है।

ख्वाहिशें

ज़िन्दगी की कश्मकश में कुछ ख्वाब अधूरे रह गये,
दिल तो मर गया, पर ख्वाहिशें ज़िंदा रह गयी।

हर रोज चाहत दिल में होती थी,
टूटे सपनो से तो अब दिल्लगी सी हो गयी,
पहले मेरे भी ख्वाबो का जाकिरा था,
अब बस एक धुंध सी पास मेरे रह गयी,
दिल तो मर गया, पर ख्वाहिशें ज़िंदा रह गयी।

उनसे प्यार किया, बस इकरार की आस अधूरी रह गयी,
दफ़न हो गयी आस मेरी, बस प्यार की कहानी हवाओं में रह गयी,
दिल तो मर गया, पर ख्वाहिशें ज़िंदा रह गयी।

हर पल चलना चाहा, रुकना नही उड़ना चाहा,
लड़खड़ाये जो कदम, चाल धीमी मेरी हो गयी,
दिल तो मर गया, पर ख्वाहिशें ज़िंदा रह गयी।

टूटते देखा जो मैंने मेरे चाहत के महल को,
कोशिश की तो उम्मीद जिन्दा रह गयी,
फिर से उड़ूँगा ये सोचके, साँसे थोड़ी मुझमें बाकी रह गयी,
दिल तो मर गया, पर ख्वाहिशें ज़िंदा रह गयी।

आशा

अँधेरे में ज्योति की तलाश है आशा,
बिखरे हुए को समेटती है आशा,
टूटे को संजोती है आशा,
हमें खुद से जोड़ती है आशा।

प्यासे को पानी की आस, आशा,
भूखे को खाने की तलाश, आशा,
बुजुर्ग को अपनेपन की तलाश आशा,
बच्चों में सदा रहे बचपन का स्वाद, आशा।

आशा के होने से जीवन होता है,
मन में ही आशा का निवास होता है,
लोग कहते है, की निराशा से आदमी टूट जाता है,
और हम कहते है निराशा से ही नीर से भरी आशा
के होने का एहसास होता है।।

बचपन

दिन के उजाले से सामना मेरा हो गया,
रात की आगोश में सपना भी मेरा सो गया,

यूँहीं खोजने निकले थे, खुशियों की ताबीज,
दु:खी न हुए मगर सच से सामना हो गया,
दुनिया की कश्मकश में शायद बड़ा मैं हो गया,
लगता है
मुझमें वो बचपन कहीं खो गया।

भागदौड़ सी जिंदगि में, रुकने को जगह नहीं,
जो रुक गए कहीं, डर लगता है, पीछे न रह जाये कहीं,
दौड़ते भागते पता नहीं कब खुद में कहीं खो गया,
लगता है जैसे
मुझमें वो बचपन कहीं खो गया।

बचपन में जिद थी खुद को नहीं खोने की,
बड़े हुए तो याद नहीं किसी खिलौने की,
कभी-कभी लगता है, मेरा जीवन बी एक खेल हो गया,
खिलाड़ी बनने की आस में,
मुझमें वो बचपन कहीं खो गया।

नींव का पत्थर

बेबसी के आलम में एक घर बना लिया,
मैंने तन्हाई को अपना मुक्कदर बना लिया।

उठ के गिरना,
गिर के उठना,

मैंने हाथो की लकीरों को मिटा,
खुद को सिकंदर बना लिया।

रोज-रोज की कश्मकश में
दिल को ठोकर जो लगी,

राह में साथ जो तेरा मिला,
उसे ही नींव का पत्थर बना लिया।

बेबस हो जाता, राह जब नहीं दिखायी है देती,
इसलिए राह में हर मिलने वाले को तिलक लगा दिया।

एहसास मेरे होने का शायद न हुआ होगा,
इसलिए हर मोड़ पे सिक्का जमा दिया।

जब देखा यहाँ सीरत नहीं सूरत पूजी जाती है,
मैंने दिल को ही अपना पत्थर बना दिया।

किस्मत

ये दुनिया का झमेला है,
भीड़ में है, फिर भी कितना अकेला है,
भीड़ में खोया हुआ है,

राह में भटक रहा है।

सामने है राह फिर भी नजरे छुपाये तड़प रहा है।
तड़प कर निकल रही है दिल से आह,
मगर इतना मगरूर हो गया की अपनी
परछाई को भी झटक रहा है।

परछाई को छोड़ जाने
कहा चला जाएगा,
नही जो संभल पाया
तो इल्जाम उसपे लगाएगा।

इल्जाम लगाके दूरी भी खुद बनाएगा,
कोसेगा किस्मत को अपनी, खुद से टूट जाएगा।
टूट के टुकड़ों में बिखर जाएगा,
अकेला आया था, अकेला ही रह जाएगा।

अशेष हो जाऊँ

कौन कहता है मैं इंसानियत का सन्देश नहीं लिखता,
बात ये है की मैं किसी व्यक्ति को विशेष नहीं लिखता।
सच कहता हूँ, जो छाये हुए है मानस पटल में मेरे,
उन शहीदों को मैं स्मृति शेष नहीं लिखता।

हाँ मैं कविता में नेहरू या गाँधी का उल्लेख नहीं लिखता,
किसी धर्म या जाती का संछेप नहीं लिखता,
लिखता हूँ उनके कर्मो के उल्लेख को,
किसी के कार्यो पर आक्षेप नहीं लिखता।

लिखता हूँ महावीर और बुद्धा की वाणी को,
राम और रहीम की जीवंत कहानी को,
अहिंसा और शाहदत में फैले मर्म को,
जो कर्मो में छुपा है, उस राजधर्म को।

लिखता हूँ मैं अपनी चाहत को,
छुपा न सकोगे दिल में, ऐसी शिकायत को,
लिखता हूँ कण-कण में फैले दर्द को,
ढूंढता फिर रहा द्वार-द्वार उस जीवन के अर्थ को।

चाहत इतनी है की शब्दो में ढूंढो और अर्थो में मिल जाऊँ,
कर्म कुछ ऐसे करू की अशेष हो जाऊँ,
कुछ करू की जीवंत रहे अटल जीवन मेरा,
मिल जाये लब्धि, और कल्प में हो अंत मेरा।

बहु या बेटी

जाने कैसे घर में रुस्वाई सी छा जाती है,
जब हमारे हिसाब से बेटियाँ परायी हो जाती है,
हलचल बंद हो जाती है आँगन में,
जब बेटियों की विदाई हो जाती है।

उनका घर में होना मानो खुशियों का होना,
उनके होने से महके घर का हर कोना, उनके जाने से एक खामोशी सी छा जाती है,
क्यों आखिर बेटियाँ पराई हो जाती है।

दादा-दादी की लाड़ली, थोड़ी नखरेलि,
पिता की आन, माँ और बहन की सहेली,
भाई की हँसी, घर की किलकारी,
सभी घरवालो को ऊँगली में घुमाने वाली।

उसके होने से घर में सुकून होता है,
वो न दिखे तो मन गुमसुम होता है,
सबके दिलो में हमेशा राज करती है,
फिर क्यों बेटियाँ परायी होती है।

नियम है संसार का, या हमारा ही बनाया कानून,
घर में आई बहु को बेटी की जगह नही दे पाते हम।
इसलिए ही शायद बेटियों को परायी बुलाते हम,
इसलिए ही शायद बेटियो को परायी बुलाते हम।।

आशीष

अगर न मिले कोई वजह मुस्कुराने की,
फिर भी खुल के जी और मुस्कुरा,
शायद जिंदगी तुझे मुस्कुराने की वजह दे-दे।।

अगर न मिले कोई जगह गम छुपाने की,
अपने ग़मों को अपनी हंसी में छुपा दे,
शायद जिंदगी तुझे किसी की हँसी बना दे।

अगर न मिले कोई तुझे अपना,
अकेलेपन को अपना ले,
शायद जिंदगी तुझे किसी
अकेले का साथी बना दे।

अगर न मिले तुझे तेरे सवालो के जवाब,
तो कर खुद की ज़िंदगी से सवाल,
शायद जिंदगी तुझे किसी के सवाल
का जवाब बना दे।

अगर न मिले तुझे किसी का हाथ सर पे,
पकड़ ले तू राह उसके बताये राह की,
शायद जिंदगी तुझे किसी का "आशीष" बना दे।

बढ़ते कदम

जब कोई रास्ता दिखाई न दे,
जब कोई आवाज सुनाई न दे,
जब लगे की छा गयी है तन्हाई,
जब लगे फैली है हर जगह रुस्वाई।

बढ़ते कदमो को रुकने न देना,
सर किसी के आगे झुकने न देना,
ये राह ये मंजिल सब तुम्हारी है,
लोगो की आस खुद से कभी टूटने न देना।

बढ़े है जो कदम किसी की भलाई में,
लगेगी ठोकर जरूर किसी की अगुवाई में,
याद रखना इस कार्यवाही में, है साथ मेरा सदा,
अपने इरादों को टूटने न देन,

बननी है ताकत तुम्हे उन बेसहारो की,
लानी है बदलाव जीवन में उजियारो सी,
आएगा उनमें बी जूनून बस तुम्हे साथ देना होगा,
सुखर जीवन में उनके तुम्हे खुशियो के बीज बोना होगा,

हम है खुद में खास, ये यकीन मन में जगाना होगा,
लड़खड़ाये जो कदम फिर भी मुस्कुराना होगा,
बहुतो की होठो की मुस्कराहट हो तुम,
इसलिए तुम्हे उनके लिए कुछ करके दिखाना होगा

रोटी कपड़ा और मकान

एक को मिली रूखी रोटी, एक को बटर नान,
एक को मिली उतरन, एक को रंगबिरंगी बनियान,
एक को मिली झोपडी, एक को बंगले आलिशान,
मांगता है आखिर क्या इंसान, रोटी कपड़ा और मकान।
कौन आमिर है कौन गरीब यहाँ, इसका अंदाजा कैसे लगाएंगे,

सब का एक है लक्ष्य और है एक मुकाम,
जो मांगता है इंसान, रोटी कपड़ा और मकान।
है सुख-दु:ख दोनों की झोली में, मगर स्ययं का नहीं नामो निशान,
थोड़े से पैसो की लालच में, बेच आये अपना ईमान,
देह साफ़ कर रहे, मन से मगर है वो बेईमान,
चाहत है उसकी भी बस, रोटी कपड़ा और मकान।
दिन भर बहा पसीना, पैदा करते खेत में धान,
रहते तैनात चौबीसो घंटे, परवाह किये बिना अपनी जान,
भूल उनको बैठ गए कुर्सी पे, मुह में चबा लिए है पान,
दिखता नही दर्द औरो का, पालतू कुत्तो में इनकी जान,
भर रहे है भण्डार खुद का, बेचकर हमारे हक के, रोटी कपड़ा और मकान।
अंधाधुन दौड़ती जिंदगी में अपनों के लिये भी तू कुछ पल रुक सकता नहीं,
बना लिया तूने खुद को कठोर इतना ऐ जालिम,
की तू उसके सामने भी झुक सकता नही, आखिर क्या है तेरा अरमान,
बस दो वक़्त की रोटी, तन को ढकने को कपड़ा और माकन।

पिता

न जाने कब जिम्मेदारी के
पौधे आँगन में खड़े हो गए,
देखते ही देखते हम कितने बड़े हो गए,
कहाँ पिताजी के चप्पल में पैर डाल के घुमा करते थे,
समझ आया तो सोचा कितने कांटे पैर में उनके गड़े थे।

नहीं थी कोई भी कमी, न आई कभी आँखों में नमी,
सोच भी शब्दों में ढलने से पहले पूरी हो जाती थी,
जाने कैसे ये बात भी उनतक पहुँच जाती थी।

युही जिन्दगी को जिंदादिली से जीने चले थे,

हम सिर्फ खुशियों के आँसू पीते चले थे,
आज जिंदादिली में दिल को ही न बचा पाये,
आँसू तो पि रहे, मगर खुशियाँ उन जैसी न जुटा पाये।

हर मोड़ पर एक साथ हुआ करता था,
हमारी धुनि में सम्भालने को हाथ हुआ करता था,
मोड़ की जगह राह में सिर्फ गड्ढे पड़े है,
खुद का भी साथ नहीं बस परछाई के सहारे खड़े है।

उम्र के इस दौर में काफी कुछ दिख जाता है,
आखिर कैसे घर से दूर रह के वो रोटिया पकाते थे,
हमें थोड़ी सी तकलीफ से कैसे वो सिहर जाते थे,
और आखिर क्यों वो आँखे साफ़ नही कर पाते थे।

क्यों बचपन से दिल में प्यार का सैलाब रख कर,
वो हमें बहार से खुद को कठोर दिखलाते थे,
क्यों हमारे सोने के बाद सोते और
हमारे जागने के पहले जाग जाते थे ।

क्यों घर वालो का साथ एक सपना हो गया,
क्यों ऑफिस और कार्यालय उनका अपना हो गया,
क्यों उनके सारे सपने सिर्फ अरमान बन गए और
हमारे सपने उनके लिए फरमान बन गए।

महफ़िल

जब से मैंने महफ़िल में रहना छोड़ दिया,
क्या बताऊँ मैंने अपने गमो को कहना छोड़ दिया,
लोग कहते है, होती है तकलीफ, जब कोई साथ नहीं होता,
मैंने कहा मैंने उस तकलीफ को सहना छोड़ दिया।

क्या करम है, उस खुदा का मुझपर की दी
मुझे निमाते अनेक, और ये जज्बा भी दिया की
मैंने लोगो की दुआओं में रहना छोड़ दिया।

लोग कहने लगे की अकेला तू
कब तक चल पाएगा,
ठोकर लगेगी तो कौन उठाएगा,
मैंने कहा जिसने दी है मुझे जिंदगी,
ये उसका मसला है,
ये कहके किसी के भरोसे रहना छोड़ दिया।

ज़िन्दगी का यही फलसफा है,
कहीं पे बदली कहीं दुआ है,
कहीं पे प्यार कहीं दुआ है,
है सब के पास खुद की तक़दीर,
ये जान कर मैंने दर-दर मन्नतो
के सहारे जीना छोड़ दिया।

हर पल करवटों की तरह बदल रहा दिन,
घनघोर घटा के साथ हो जाती रात,
मिटा दी है हफ्ते, महीने साल की कल्पना दिल से,

मैंने सितारों के हिसाब से महल संजोना छोड़ दिया।

देख रहा हूँ मैं हाल मेरे अपनों का,
उनके संग बनाये सपनो का।
तकलीफ हुई उस दिन जब टूट
गया ऐतबार इंतेजार करते,
मैंने सपनो के महल बुनकर
अँधेरे मैं जिना छोड़ दिया।

आखिर समझ में आया,
जहाँ में खुश रहना है,
तो ख़ुशी को दिल में बसा के
रखो और मुस्कराहट को आँखों में
बसा के रखो, ये जान कर मैंने हस्ती
आँखों के साथ, अकेले घुट-घुट के रोना छोड़ दिया।

समय

समय एक कहानी है हमारे सूनेपन की,
एक कहानी है हमारे उलझे मन की,
एक कहानी है किसी के साथ की,
एक कहानी है किसी के इंतेजार की।

एक कहानी है किसी के प्राण की,
एक कहानी है किसी के अभिमान की,
एक कहानी है अपने आने वाले पल की,
एक कहानी है अपने बीते हुए कल की।

एक कहानी है हमारे आज की,
एक कहानी है एक रोटी और दो प्याज़ की,
एक कहानी है सीमा पर बेटे की अगुवाई की,
एक कहानी है बेटी की विदाई की।

एक कहानी है माँ के विश्वास की,
की उसका बेटा आएगा, की वो देश की लाज बचाएगा,
एक कहानी है बीवी के माथे के सिन्दूर की,
एक कहानी है बहन की राखी की।

समय वो है जो चलता है अपने ही गम पे,
नहीं है रुकता किसी ख़ुशी या गम पे,
समय वो है जो खेलता है हमसे तन्हाई में,
जो नहीं होता पास हमारे किसी की रुस्वाई में।

समय वो है जो सिखाता है,
समझ अच्छाई की,
या जो देता है समझ बुराई का,
समय वो है जो राजा को भी रंक बना देता है,

या फिर एक मामूली टुकड़े को कोहिनूर सा सजा देता है,
समय वो है जिसके दर पे झुकता हर कोई है।

उलझन बड़ी है, साथ समय के,
होती है हर किसी कि सांख समय से,
होना है हर काम समय से,
फिर भी नहीं चलते साथ समय के।

हालात काबू में न होने पे,
दाल देते है इल्जाम समय पे,
समझाता है कबीर भी बात समय की,
होती है अहमियत आज के, आज समय की,
क्योंकि कल वो समय न आएगा,
तेरा कल फिर आज बन जाएगा।

कहता हूँ मैं एक बात पते की,
जान ले बात और मान ले तू,
समय है जीवन पहचान ले तू,
घट जाएगी घड़िया चिंता की, समय की रफ़्तार थाम ले तू।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम – आशीषडाकलिया
जन्म – 20 जुलाई1987, राजनांदगाँव
शिक्षा – [illegible]
ई मेल – ashi[illegible]jain@g[illegible].com
मो. – 9827182145
प्रकाशन – कुछ साझा संग्रहों एवं समाचार पत्रों में रचनाएँ प्रकाशित
सम्मान – अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2018

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क– ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-027-8
मूल्य– 60/–